

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में उड़द की खेती के लिए प्रमुख सुझाव



अवनीन्द्र कुमार सिंह, राज कुमार गौतम, पंकज कुमार सिंह,
कृष्ण कुमार, नरेश कुमार, सच्चिदानंद स्वाइन, टी. सुब्रमणि, विवेकानंद सिंह,
संजय पाण्डेय, एस० के० ज़मीर अहमद, शिबनारायण दाम रॉय

(जनजातीय उप योजना के अंतर्गत)

केन्द्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान

(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)

पोस्ट बॉक्स संख्या 9८9, पोर्ट ब्लेयर - 744 101

(अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह)



AgriSearch with a human touch



अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह में उड़द की खेती के लिए प्रमुख सुझाव

परिचय

उड़द की खेती भारत के विभिन्न कृषि-जलवायु वाले क्षेत्रों में सफलतापूर्वक की जाती है। यह भारत में उगाई जाने वाली प्राचीनतम तथा कम समय में पकने वाली महत्वपूर्ण दलहन की फसल है। अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूहों में भी देश के अन्य भागों की तरह भोजन के पोषण गुण के कारण उड़द की फसल अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। उड़द इस द्वीप समूह में मूंग की फसल के बाद दलहनी फसल के रूप में उगाई जाने वाली दूसरी प्रमुख दलहनी फसल है,



जिसकी खेती धान की खेती के बाद रबी के मौसम में एक बड़े भू-भाग पर की जाती है। धान की फसल के बाद मूंग की खेती कम दिनों (लगभग 65-85 दिनों) की फसल के रूप में एवं प्रोटीन से भरपूर होने के कारण किसानों को एक अतिरिक्त खाद्य तथा अतिरिक्त आय एवं एवं पोषण सुरक्षा वाली फसल है। उड़द की खेती सामान्यतः इस द्वीप समूह के सभी क्षेत्रों में की जाती है परन्तु उत्तरी एवं मध्य अंडमान, दक्षिणी अंडमान, छोटा अंडमान (Little Andaman) एवं निकोबार द्वीप समूह के ग्रेटर निकोबार (Greater Nicobar - Campbell Bay) द्वीप समूह के क्षेत्र में प्रमुखता से की जाती है। इसमें प्रोटीन की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता के कारण स्वास्थ्य के लिए भी यह फसल अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

सारणी - 1: उड़द में पाए जाने वाले प्रमुख पोषक तत्व एवं खनिज पदार्थ

| पोषक तत्व | पोषक पदार्थों की मात्रा | खनिज लवण | खनिज लवण की मात्रा |
|----------------|-------------------------|------------|--------------------|
| पानी | 90.5 ग्राम | कैल्सियम | 980 मिलीग्राम |
| उर्जा | 389 किलो कैलोरी | लौह तत्व | 2.7 मिलीग्राम |
| प्रोटीन | 25.29 ग्राम | फास्फोरस | 376 मिलीग्राम |
| कुल लिपिड्स | 9.68 ग्राम | पोटेशियम | 622 मिलीग्राम |
| वसा (:) | 9.2 | मैग्नीशियम | 267 मिलीग्राम |
| फाईबर | 92.3 ग्राम | | |
| कार्बोहाइड्रेट | 52.6 ग्राम | | |

अपनी पोषणगुणवत्ता के साथ ही, अन्य दलहनी फसलों की तरह उड़द में वातावरणीय नत्रजन को पौधों द्वारा ग्रहण करने योग्य अदभुत क्षमता होती है। इसकी जड़ों में पाए जाने वाले राइजोवियम नामक बैक्टीरिया, जो कि वातावरण से नाइट्रोजन को अवशोषित करके उसका मिट्टी में स्थिरीकरण कर देता है जिसका लाभ पौधे को प्राप्त होता है, और इन फसलों में नाइट्रोजन की कम आवश्यकता पड़ती है, फलस्वरूप उत्पादन लागत भी कम आती है। शीघ्र पकने वाली प्रजातियों के विकास से उड़द की खेती देश के अन्य दक्षिणी भागों की तरह ही इस द्वीप समूह में मुख्यरूप से

रबी के मौसम में की जाती है, लेकिन रबी के साथ ही साथ इसकी खेती बसंत ऋतू में भी की जा सकती है। यदि उपलब्ध वैज्ञानिक विधियों और उन्नत तकनीकों से इस फसल की खेती की जाये तो इनका उत्पादन इस द्वीप समूह में भी बढ़ाया जा सकता है।



जलवायु

उड़द की फसल के लिए अधिक वर्षा हानिकारक होती है, इसलिए रबी का मौसम इस द्वीप समूह में इसकी खेती के लिए सर्वथा उपयुक्त है। क्योंकि, रबी के मौसम में इन द्वीप समूहों में होने वाली वर्षात इसकी खेती के लिए उपयुक्त होती है साथ ही पौधों के वानस्पतिक वृद्धि की अवस्था में सामान्यतया सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। उड़द की फसल के लिए गर्म जलवायु की आवश्यकता होती है, और पौधों पर फलियाँ आने तथा पकने के समय शुष्क मौसम तथा उच्च तापक्रम अधिक लाभप्रद होता है। इस द्वीप समूह में रबी का मौसम उपरोक्त प्रकार के जलवायु का होने के कारण, उड़द की फसल के लिए अधिक उपयुक्त है।

भूमि का चुनाव

उड़द की खेती विभिन्न प्रकार की मृदाओं में सफलतापूर्वक की जा सकती है, जैसे कि हल्की से भारी मिट्टी, लेकिन इनमें दोमट एवं बलुई दोमट मिट्टी अच्छी मानी जाती है। इन द्वीप समूहों में उचित जल निकास वाली चिकनी दोमट, दोमट, बलुई दोमट एवं बलुई मृदाएँ (मिट्टी) उड़द की खेती के लिए सबसे ज्यादा उपयुक्त होती हैं।

भूमि की तैयारी

उड़द की बुवाई के लिए स्वच्छ व गहरा जुता हुआ खेत अधिक उपयुक्त होता है, जिससे भूमि के अन्दर छिपे हुए कीट व कीट कोषक ऊपर आ जाते हैं और कीटभक्षी पक्षी उन्हें खाकर नष्ट कर देते हैं। इसके अलावा मिट्टी में अन्दर रहने वाले रोंगों के बीजाणु भी नष्ट हो जाते हैं। धान की फसल काटने के पश्चात् खेत में उपयुक्त नमी के होने पर एक जुताई देशी हल अथवा मिट्टी पलटने वाले हैरो (डिस्क हैरो) अथवा पॉवर टिलरसे गहरी जुताई करके 2 से 3 दिनों के लिए छोड़ देना चाहिए जिससे कि खरपतवार नष्ट हो जाते हैं। इसके पश्चात् खेत की जुताई देशी हल अथवा कल्टीवेटर से करके भली-भाँती पाटा लगाना चाहिए, जिससे कि मिट्टी महीन व खेत समतल हो जाए और मिट्टी की नमी अधिक दिनों तक बनी रहती है। उसके बाद बीज की बुवाई करने पर बीजों का अंकुरण एवं प्रान्कुर का विकास अच्छा होता है। अगर जमीन में दीमक लगने की शिकायत हो तो 25-30 किग्रा लिंडेन धूल प्रति हेक्टेयर से भूमि को उपचारित करें।



बुवाई का समय

उड़द की शीघ्र पकने वाली प्रजातियों की बुवाई नवम्बर के प्रथम सप्ताह से दिसम्बर के अंतिम सप्ताह तक करनी चाहिये। शीघ्र पकने वाली प्रजातियों को जायद (फरवरी) में भी बोया जा सकता है। उड़द की बुवाई शुद्ध / एकल फसल के रूप में नवम्बर के प्रथम पक्ष से लेकर दिसम्बर के प्रथम पक्ष में करने पर उचित पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

अच्छी उपज के लिए उड़द की प्रमुख प्रजातियाँ

उड़द की अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए शीघ्र एवं लगभग एक साथ पकने वाली रोग प्रतिरोधी रोगमुक्त, विषमुक्त और स्वस्थ बीज की बुवाई ही करनी चाहिए। उचित उपज प्राप्त करने के लिए रबी उड़द के लिए संस्तुत एवं उन्नत प्रजातियों का चुनाव उनकी विशेषताओं के आधार पर करना चाहिये।

उड़द की रबी एवं बसंत ऋतु के लिए प्रमुख प्रजातियाँ: वाम्बन-4 (VBG-4), वाम्बन-5 (VBG-5), वाम्बन-6 (VBG-6), वाम्बन-7 (VBG-7), उत्तरा (Uttara), आइ पी यू 02-43 (IPU -02-43), एलबीजी-752 (LBG -752), एलबीजी-645 (LBG -645), सी ओ बी जी-653 (COBG 653) तथा एडीटी-3 (ADT-3)।

बीज की मात्रा एवं बीज का उपचार

उड़द की रबी तथा बसंत ऋतु के लिए बीजदर 15 - 20 किग्रा / हेक्टेयर रखना चाहिए तथा बोवाई पंक्तियों में (कतारों में) 30 सेमी की दूरी पर करनी चाहिए। हल के पीछे कूंड में बुवाई करनी चाहिये। कूंड से कूंड की दूरी 30 सेमी रखनी चाहिये तथा बुवाई के बाद तीसरे सप्ताह में घनेपौधों को निकाल कर पौधे की दूरी 10 सेमी कर देनी चाहिये। बीज की बुवाई कूंड में 3 से 5 सेंटी मीटर की गहराई में करनी चाहिए, जिससे कि गर्मी में जमाव अच्छा हो सके। प्रारम्भ में भूमि जनित व पादप जनित रोगों से बचाव के लिए थीरम या बावरस्टीन से 25 ग्राम प्रति 10 किग्रा बीज का शोधन करना चाहिए या 10 ग्राम कार्बेन्डाजिम / प्रति किलोग्राम बीज या 20 - 30 ग्राम थीरम फफूंदनाशक दवा की दर से प्रति 10 किलोग्रामबीज को उपचारित करने से बीज एवं भूमि जन्य बीमारियों से फसल की सुरक्षा होती है।



जैविक बीजोपचार

उड़द की फसल में नत्रजन ग्रन्थियों को बढ़ावा देने के लिए बीज में राइजोबियम कल्चर (राइजोबियम जीवाणुओं) के 5 ग्राम प्रति किलोग्राम की मात्रा से मिलाना चाहिए। 20-40 ग्राम तत्त्व के रूप में करना चाहिए। सामान्य दशा में उपरोक्त मात्रा की पूर्ति 100 किलोग्राम डी. ए. पी. से हो जाती है। उर्वरको की पूरी मात्रा, बुवाई के समय कूंडों में 2-3 सेंटीमीटर नीचे देना चाहिए। दाना बनते समय 2: यूरिया घोल का छिड़काव करने से उपज में वृद्धि होती है।

उर्वरक

सामान्यतरु उर्वरको का प्रयोग मृदा परीक्षण की संस्तुतियों के अनुसार करना चाहिये, लेकिन 15-20 किलोग्राम नत्रजन, 40 किलोग्राम फास्फोरस एवं 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टर प्रयोग तत्त्व के रूप में करना चाहिए। सामान्य दशा में उपरोक्त मात्रा की पूर्ति 100 किलोग्राम डी. ए. पी. से हो जाती है। उर्वरको की पूरी मात्रा, बुवाई के समय कूंडों में 2-3 सेंटीमीटर नीचे देना चाहिए। दाना बनते समय 2: यूरिया घोल का छिड़काव करने से उपज में वृद्धि होती है।

सिंचाई एवं जल निकास

रबी की फसल में अल्पवर्षा या वर्षा के अभाव में विशेष रूप से फलियां बनते समय यदि संभव हो तो एक सिंचाई करने की अति आवश्यकता पड़ती है। इसके बाद आवश्यकतानुसार 10-15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए। यदि उड़द की बुवाई जायद (फरवरी) की फसल के रूप में की जा रही है तो अच्छी उपज प्राप्त करने के लिए पहली सिंचाई बुवाई के 30-35 दिन बाद करनी चाहिए, इसके बाद आवश्यकतानुसार 10-15 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए। जब फसल पूर्ण पुष्प अवस्था पर हो तो उस समय कोई भी सिंचाई नहीं करना चाहिए।

अत्यधिक वर्षा की स्थिति होने पर खेत से जल के समुचित निकास का प्रबंध आवश्यक है। पानी के अधिक दिनों तक खेत में खड़ा रहने पर फसल के नष्ट होने की संभावना अधिक होती है।

खरपतवार प्रबंधन

बुवाई के बाद तीसरे या चौथे सप्ताह में पहली निराई गुड़ाई तथा आवश्यकतानुसार दूसरी निराई बुवाई के 40-50 दिन बाद करनी चाहिये। घास तथा चौड़ी पत्ती वाले खरपतवारों को रासायनिक विधि से नष्ट करने के लिए फ्ल्यूक्लोरिन (45 EC) नामक तृण नाशक रसायन की 2.2 लीटर मात्रा को 800 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई से पहले प्रति हे. की दर से भूमि पर एक साथ छिड़काव करके मिटटी में मिला दे या एलाक्लोर (लासी) 4 लीटर प्रति हे. 700-800 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के तुरन्त बाद छिड़काव करें, अथवा पेंडिमिथलीन (Pendimethalin) 30EC 3.3 लीटर प्रति हे. की दर से 700-800 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 2 दिन के भीतर जमाव से पूर्व छिड़काव करें।



फसल सुरक्षा एवं पादप रोग प्रबंधन

उर्द में प्रायः पीले चित्रवर्ण या मोजैक रोग लगता है, इसमें रोग के विषाणु सफ़ेद मक्खी के द्वारा फैलता है, इसकी रोकथाम के लिए समय से बुवाई करना अति आवश्यक है, इसके अतिरिक्त मोजैक अवरोधी प्रजातियों की बुवाई करनी चाहिए, इसके साथ ही साथ मोजैक से ग्रहित पौधे फसल में दिखते ही सावधानी पूर्वक उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। बीमारी आने पर इलाज करने से अच्छा है की बीमारी आने ही न दें, इसलिए रोगमुक्त, विषमुक्त और स्वस्थ बीजों का ही प्रयोग करना चाहिए।

चारकोल विगलन (Macrophomina blight) रोग

यह रोग मैक्रोफोमिना फजियोलिना कवक द्वारा शुष्क एवं नमजलवायु का क्षेत्र होने के कारण इस द्वीप समूह में इस रोग का प्रकोप ज्यादा होने की संभावना बनी रहती है। कल्थई भूरे रंग के विभिन्न आकार के धब्बे पत्तियों के निचले भाग पर मैक्रोफोमिना एवं सरकोस्पोरा फफूंद के द्वारा बनते हैं। इस रोग के प्रबंधन के लिए सबसे पहले रोग के लक्षण दिखाई देने पर पौधों के अवशेषों को निकालकर नष्ट कर देना चाहिए जिससे रोग के बीजाणु नष्ट हो जाते हैं। बुवाई से पहले खेत में जिंक सल्फेट (Zinc Sulphate) 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर या नीम की खली 150 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर या ट्राईकोडर्मा विरिडी 2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर + 50 किलोग्राम गोबर की खाद का प्रयोग करने से इस रोग के प्रकोप को रोका जा सकता है। इनकी रोकथाम के लिये कार्बेन्डाजिम (50 WP) या फायटोलान या डायथेन जेड-78, 10 ग्राम / लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें आवश्यकतानुसार 2 छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करना चाहिए।



सर्कोस्पोरा पत्र बुंदकी रोग (Cercospora leaf spot)

इस द्वीप समूह में उड़द का यह एक प्रमुख रोग है जिससे कि फसल को भारी क्षति होती है। इस द्वीप समूह की आर्द्र जलवायु के कारण वातावरण में नमी अधिक होने पर यह रोग उत्पन्न होता है। कभी कभी रोग के अनुकूल मौसम होने पर यह महामारी का रूप ले लेता है और सम्पूर्ण फसल को भी नष्ट कर देता है। यह सर्कोस्पोरा नामक कवक के द्वारा उत्पन्न होता है। इसमें पत्तियों पर भूरे रंग के धब्बे पड़ जाते हैं जिनकी बाहरी सतह भूरे लाल रंग की होती है।



पर्ण व्याकुंचन रोग / झुर्रीदार पत्ती रोग (Leaf Crinkle)

इस द्वीप समूह में पर्ण व्याकुंचन उड़द का एक प्रमुख विषाणु जनित रोग है। यह रोग सामान्यतया उड़द की फसल में ही देखा गया है। इस विषाणु द्वारा पौधा यदि अपनी प्रारम्भिक अवस्था में संक्रमित हो जाता है तो फसल को भारी क्षति होती है। कभी कभी यह रोग, अनुकूल मौसम होने पर महामारी का रूप ले लेता है और सम्पूर्ण फसल को नष्ट कर देता है। इस रोग के लक्षण सामान्यतः फसल बोन के तीन से चार सप्ताह बाद प्रकट हो जाते हैं। इस रोग के विशिष्टलक्षण पत्तियों की सामान्य से अधिक वृद्धि तथा बाद में इनमें सिलवटें (झुर्रियां) या मरोड़पन होना है। ये पत्तियाँ छूने पर सामान्य पत्ती से अधिक मोटी तथा खुरदरी प्रतीत होती हैं। इस रोग से बचाव के लिए रोग रहित स्वस्थ पौधे से प्राप्त बीज की ही बुवाई करनी चाहिए। रोगी पौधों को शुरुआत में ही उखाड़ कर फेंक देना चाहिए। बुवाई से पहले बीज को इमिडाक्लोप्रिड 70 WS @ 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। डाइमिथाएट (30 ई.सी) 17 मि. ली. प्रति 10 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टरकी दर से छिड़काव करना चाहिए।



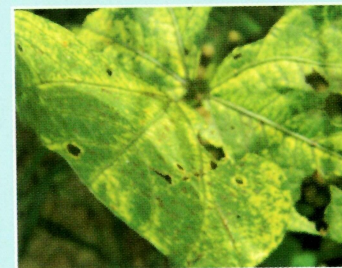
चूर्णी कवक रोग या भभूतिया रोग या बुकनी रोग (Powdery Mildew)

चूर्णी कवक रोग या भभूतिया रोग या बुकनी रोग उड़द का एक प्रमुख रोग है। इसके अधिक प्रकोप से उड़द की फसल की पैदावार पर बुरा प्रभाव पड़ता है। यह रोग चूर्णी कवक (*Erysiphae plygonii*) के द्वारा होता है जिससे पौधे की पत्तियों और दूसरे भागों पर सफेद चूर्णीधब्बे पड़ जाते हैं। यह धब्बे बाद में मटमैले रंग में बदल जाते हैं। रोग के भीषण प्रकोप से पत्तियाँ अपरिपक्व अवस्था में ही सिकुड़कर गिर जाती हैं। इसकी रोकथाम के लिये घुलनशील गंधक 0.15 प्रतिशत या कार्बेन्डाजिम 0.1 प्रतिशत के 15 दिन के अंतराल पर तीन छिड़काव करें। उड़द की रोग प्रतिरोधी किस्में जैसे कि उत्तरा, एल. बी. जी. 402 एवं एलबीजी-752 प्रजातियों का प्रयोग करना चाहिए।



पीला चित्रवर्ण रोग (यलो मोजेक)

पिला चित्रवर्ण रोग एक विषाणु जनित रोग होता है। यह रोग कई अन्य दलहनी फसलों जैसे कि मूंग एवं लोबिया व जंगली पौधों की कुछ जातियों पर पाया जाता है। यह रोग सफेद मक्खियों द्वारा फैलता है। इस रोग के लक्षण प्रारम्भ में पत्तियों पर पीले चितकबरे धब्बे के रूप में दिखाई देते हैं। यह धब्बे अनुकूल परिस्थितियों में एक साथ मिलकर तेजी से फैलाते हैं जिससे पत्तियों पर बड़े बड़े पीले धब्बे बन जाते हैं। रोग की उग्र अवस्था में सम्पूर्ण पत्ती पीली पड़ जाती है और फसल को व्यापक नुकसान पहुंचाता है। इस रोग के प्रकोप में पत्तियों के साथ साथ फलियों पर भी पीले धब्बे देखे गए हैं। इसकी रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 70 WS @ 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए या डाइमिथाएट 30 ई.सी 1 लीटर प्रति हेक्टर या ओक्सीडिमोटान मिथाइल (Oxydemeton methyl) 25EC @ 2 मिली. प्रति लीटर प्रति हेक्टरका छिड़काव करना चाहिए। उड़द की रोग प्रतिरोधी जैसे कि उत्तरा, आई. पी. एम.-02-43, एल. बी. जी. 402 एवं एलबीजी-752 किस्मों का प्रयोग करना चाहिए।



कीट नियंत्रण

उड़द की फसल को खेत से लेकर भण्डारण तक विभिन्न प्रकार के हानिकारक कीट नुकसान पहुंचाते हैं। लेकिन इन हानिकारक कीटों की समस्या फसल की अवस्था, तापमान, वर्षा, नमी और

सूर्य की रोशनी के हिसाब से बदलती रहती है। उड़द की फसल को सबसे ज्यादा हानि पत्ती खाने वाले कीटों से होती है जो किपत्तियों के साथ-साथ फूल एवं फलियों को भी खाते हैं। इनके अतिरिक्त कुछ कीट फूल, पत्तियों और फलियों का रस चूसने वाले होते हैं, जिनके प्रकोप से ज्यादातर फूल झड़ जाते हैं और दाने अच्छे नहीं बनते। इनमें से कुछ कीट जैसे कि एफिड, थ्रिप्स, तना छेदक मक्खी, श्वेत मक्खी, गेलरुसिड बीटल एवम फली भेदक प्रमुख कीट है। सामान्यतौर पर जिनके प्रकोप से इस द्वीप समूह में उड़द की फसल को ज्यादा नुकसान होता है। इनके प्रबंधन के लिए कुछ संस्तुत रसायन निम्नवत हैं ;

| कीट | प्रबंधन |
|----------------|--|
| एफिड | <ul style="list-style-type: none"> पीला प्रकाश प्रपंज (Yellow light trap) लगाकर कीट को नियंत्रित किया जा सकता है। 5: नीम चूर्ण या 2% नीम तेल 3000 पीपीएम का छिड़काव करना चाहिए। डाइमिथाएट (Dimethoate) 30 EC @ 1 मिली. या इमिडाक्लोप्रिड (Imidacloprid) 17.8 SL @ 2 मिली. 10 लीटर पानी का छिड़काव करना चाहिए। |
| थ्रिप्स | <ul style="list-style-type: none"> नीम आधारित कीटनाशक (NSKE) 5% @ 50 ग्राम / ली. तथा 2% नीम तेल 3000 पीपीएम का छिड़काव करना चाहिए। ट्राइअजोफास (Trazophos) 40EC @ 2 मिली. या इथियोन 50 EC @ 2 मिली. / 10 लीटर पानी का छिड़काव करना चाहिए। |
| तना छेदक मक्खी | <ul style="list-style-type: none"> भूमि की गहरी जुताई कर मिट्टी में छिपे कीट कोषको को नष्ट कर देना चाहिए। कीट प्रभावित क्षेत्रों में बुवाई से पहले इमिडाक्लोप्रिड (Imidacloprid) 17.8 SL @ 5 मिली./ किग्रा. बीज को 100 मिली. पानी के साथ उपचारित करना चाहिए। इमिडाक्लोप्रिड (Imidacloprid) 17.8 SL @ 2 मिली. का छिड़काव करना चाहिए। |
| श्वेत मक्खी | <ul style="list-style-type: none"> पीला प्रकाश प्रपंज (Yellow light trap) लगाकर कीट को नियंत्रित किया जा सकता है। इमिडाक्लोप्रिड (Imidacloprid) 70 WS @ 5 ग्राम / किग्रा. बीज के साथ उपचारित करना चाहिए तथा 15 दिन के अन्तराल के बाद इमिडाक्लोप्रिड (Imidacloprid) 17.8 SL @ 0.2 मिली./ ली. का छिड़काव करना चाहिए। |
| गेलरुसिड बीटल | <ul style="list-style-type: none"> फोरेट (Phorate) 10 G @ 10 किग्रा. / हेक्टेयर तथा डाईसलफोटान 5 G @ 20 किग्रा. / हेक्टेयर इस कीट के नियंत्रण के लिए प्रभावी है। |
| फली भेदक | <ul style="list-style-type: none"> गंध प्रपंज (Pheromone trap) 5 / हेक्टेयर लगाकर कीट को नियंत्रित किया जा सकता है। 5: नीम तेल 3000 पीपीएम का छिड़काव करना चाहिए। क्युनाल्फोस 25 ई. सी. 1.25 लीटर मात्रा प्रति हेक्टेयर की दर से 700-800 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए। |

फसल कटाई एवं मड़ाई

जब फसल में फलियाँ पूरी तरह पककर सूख जाएँ, जब फलियाँ काली पड़कर (लगभग 90 प्रतिशत तक पक जाने पर) पकने लगे तभी कटाई करनी चाहिए। कटाई के बाद भी खलिहान में फसल को अच्छी तरह सुखाकर ही मड़ाई करके तथा बीज औसाई करके अलग कर लेना चाहिए।

उपज

उपरोक्त तरीके से उड़द की खेती करने पर 10-12 विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जा सकती है।

भंडारण

भंडारण के लिए बीज को भंडारण करने से पहले अच्छी तरह से सुखा लेना चाहिए, क्योंकि बीज में 10 प्रतिशत से अधिक नमी नहीं रहनी चाहिए, उड़द के भंडारण में स्टोरेज बीनस का प्रयोग करना चाहिए, सूखी नीम की पत्ती को बीज में मिलाकर भंडारण करने पर कीड़ों से सुरक्षा की जा सकती है।



प्रकाशक

निदेशक, केन्द्रीय कृषि अनुसंधान संस्थान
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद),
पोस्ट बॉक्स संख्या - 181, पोर्ट ब्लेयर - 744 101
(अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह)